हमारे मार्गदर्शक

परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज,

आपने योग को घर–घर तक पहुँचाने व वैश्विक पटल पर विराट रूप मे प्रतिष्ठापित कर लाखों–करोडों लोगों के जीवन में नया सवेरा लाकर उम्मीद की नई किरण जगाई। आज योग लोगों की दिनचर्या का एक हिस्सा बन गया है। योग के माध्यम से लोगों को जटिल व असाध्य रोगों का ईलाज स्वंय ही मिल गया है। परम पूज्य स्वामी जी का एक ही लक्ष्य तथा एक ही सपना है स्वस्थ, स्वच्छ, निर्मल भारत व भूख–भय–भ्रष्टाचार–लाचारी एवं गरीबी से मुक्त भारत। आज स्वामी जी के व्यवस्था–परिवर्तन के संकल्प को पूरी दुनिया मान चुकी है। परम पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन मे आज पतंजलि के उत्पाद 100% शुद्ध व उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं जिसने आज भारतीय समाज को विदेशी वस्तुओं का विकल्प प्रदान किया है।

हमारे मार्गदर्शक

श्रधेय आचार्य बालकृष्ण जी,

आप स्वामी जी के सपनो व संकल्पो को मूर्तरूप देने के साथ–साथ लाखों रोगियों को प्रत्यक्ष चिकित्सा उपलब्ध करा चुके है व करा रहे है। आपके निर्देशन मे हजारों वैद्य देश–विदेश मे विजय पताका फहरा चुके हैं। आपके कार्य को रॉयल बोटैनिकल गार्डन लंदन ने भी सराहा है। आपने आयुर्वेद शास्त्र को पुनर्जीवित किया है। आपने दुनिया के सबसे बड़े विश्व भैंषज संहिता पर कार्य करने के साथ–साथ सहज भाषा मे आयुर्वेद के गूढ़ रहस्य को संजोकर आम जनता तक पहुँचाने का भागीरथ प्रयत्न किया है और आपका ही प्रयास है कि आयुर्वेदीय ज्ञान व अनुभव का लाभ मनुष्यों के बाद अब पशुओं को भी मिल रहा है। आपके प्रबन्धकीय, प्रशासनिक और अभियांत्रिकीय ज्ञान व अनुभव को देख देश–विदेश के सभी लोग नतमस्तक हो जाते हैं।

“ओ३म”

किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके सम्बन्ध मे कम से कम सामान्य ज्ञान तो होना ही चाहिये। तभी उस कार्य को दक्षतापूर्वक करना सम्भव होता है और अभीष्ट फल की सिद्धि भी होती है।

पशुपालन ऐसा ही व्यवसाय है, जो कुशलता से किया जाये तो उसमें उत्त्रोत्तर उन्नति ही होती है, ग्रामीण ही नहीं अपितु शहरी व नगरीय जनता भी दूध व उसके उत्पादों तथा पशुजन्य सामग्रियों की पूर्ति हेतु पशुधन पर निर्भर रहती है।

पशुपालन कृषि कार्य में तो और भी चार चाँद लगा देता है तथा देश की अर्थव्यवस्था में महान योगदान पशुपालन व्यवसाय ही तो करता है। सच्चे अर्थों में पशुपालन को हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड कहा जाये तो अनुचित नही होगा।

—डॉ० यशदेव शास्त्री

पतंजलि ग्रामोद्योग न्यास (पी.जी.एन.)

नैतिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से देश के करोडो ग्रामीणो के उत्थान हेतु इस ट्रस्ट की स्थापना 5 जनवरी 2011 को की गई। ग्रामीणों के जीवन एवं स्वास्थ्य के साथ-साथ आर्थिक उन्नति में सहभागिता के लिए ग्रामोद्योग को एक साधन के रूप में प्रयोग करना, इसी उद्देश्य के साथ गाँवो मे उपलब्ध धन, मानव तथा अन्य संसाधनो के प्रयोग द्वारा ग्राम स्तर पर ग्रामोद्योग की स्थापना करना एवं पारम्परिक ज्ञान, कला तथा कौशल को एक उद्योग मे परिवर्तित करना है। पतंजलि ग्रामोद्योग का मुख्य उद्देश्य गरीबी उन्मूलन व ग्रामीणों के आर्थिक व सामाजिक स्तर को बेहतर बनाना तथा ग्रामीणों के बीच आपसी सहयोग एवं एकता स्थापित करना तथा समान उद्देश्य वाली अन्य सस्ंथाओं/ट्रस्टों के सहयोग से स्वदेशी उत्पादों का बाजार विकसित करना। ग्रामोद्योग का उद्देश्य स्वदेशी उत्पादो का क्रय एवं विक्रय, विनिमय सहयोग, कच्चे माल का सग्रंह तथा आधुनिक साधन सामग्री की व्यवस्था आदि करना है।

पशुपालन को सम्पूर्ण व्यवसाय के रूप मे अपनाकर ग्रामीणों की आर्थिक प्रगति के साथ-साथ देश में गौ-वंश की रक्षा करने हेतु ट्रस्ट की ओर से पशु पोषण एवं स्वास्थ्य प्रभाग की शुरूआत की गई है। दूध देने वाले पशुओ को शास्त्रेक्त (वैज्ञानिक) एवं सन्तुलित पशु आहार (ऐसा पशु आहार जो स्थानिक पशु की जरूरत की पूर्ति कर सके) के साथ फीड सप्लीमेंट (जड़ी-बूटी युक्त कैल्शियम आदि) तथा पशुओं की आयुर्वैदिक दवाईयों को उपलब्ध कराना है।

पतंजलि ग्रामोद्योग के सभी उत्पाद उच्च एवं श्रेष्ठ गुणवत्ता युक्त तो बनाए ही गए है साथ ही उचित मूल्य पर उपलब्ध किए गए है, जिससे पशुपालक अच्छा दूध उत्पादन ले सके ओर पशु भी स्वस्थ रहे जिससे पशुपालकों/ कृषको की आर्थिक उन्नति के साथ-साथ हमारा कृषि प्रधान देश भी समृद्धशाली होगा।

-डॉ० अतुल जोशी

प्रस्तावना :

भारत विश्व का सबसे अधिक दुग्ध उत्पादक देश है। यह सब हमारे यहाँ पशु जनसख्याँ के कारण है परन्तु हमारे प्रति पशु उत्पादकता बहुत कम है। इसका मुख्य कारण सन्तुलित आहार का उपलब्ध ना होना है। भारतीय दुग्ध उत्पादन मे 70 प्रतिशत दूध की आपूर्ति भूमिहीन किसानों से होती है। दुग्ध उत्पाद का हिस्सा देश की जीडीपी का करीब 5 प्रतिशत है। भारतीय परम्परा मे देशी गाय के दूध को अमृत कहा गया है, दूध का उत्पादन तेजी से बढ़ाने के लिए पशुओ को अच्छी गुणवत्ता वाला फीड आवश्यक है। यह सर्व विदित है कि दुधारू पशुओं पर करीब 60 से 70 फीसदी खर्च सिर्फ उनकी खुराक पर होता है। ऐसे में आवश्यक है कि पशुओं की खुराक उनके उत्पादन के अनुरूप उचित एवं सन्तुलित हो जिसमे सभी आवश्यक तत्व विद्यमान हो। प्राय: आम खाद्य पदार्थ मे निम्नलिखित तत्व पाये जाते हैं–

पशु को मुख्यत: छ: पोषक तत्व सन्तुलित मात्र में आवश्यक हैं–

1. प्रोटीन
2. खनिज लवण
3. विटामिन
4. वसा
5. कार्बोहाइड्रेट
6. जल

प्राय: पशुपालक केवल चोकर, खली, हरा चारा एवं सूखा चारा ही अपने दुधारू पशुओ को खिलाते है तथा वैज्ञानिक तरीके से तैयार खुराक की उपयोगिता नहीं समझते ओर न ही सन्तुलित आहार का प्रयोग करते है, जिससे पशुपालक को जितना उत्पाद मिलना चाहिये उतना नहीं मिल पाता। अतैव यह अति आवश्यक है कि पशुपालक उन पर विशेष ध्यान दे तथा केवल सन्तुलित आहार ही प्रयोग करें। जिसमें उपरोक्त तत्त्वों का समावेश हो। सन्तुलित पशु आहार से ही पशु एवं पशुपालकों को लाभ हो सकता है। पशु आहार जितना आवश्यक है उतना ही साफ जल भी आवश्यक है। अत: समय-समय पर जल पिलाते रहना चाहिये।

दुग्धामृत की विशेषता :

- यूरिया रहित पशु आहार
- चिलेटेड मिनरल के साथ है अन्य आवश्यक खनिज लवण भी
- विभिन्न प्रकार के विटामिन्स से युक्त
- जड़ी-बूटी से भरपूर
- वैज्ञानिक विधि से बनाया सन्तुलित आहार
- पूर्णतः शाकाहारी

पतंजलि दुग्धामृत सिल्वर/सिल्वर प्लस :

(10-12 ली॰ तक के पशुओं के लिए)

विशेषताएं :

- "दुग्धामृत" पशु आहार यूरिया रहित है।
- स्थानीय क्षेत्र मे पशुओं को खिलाये जाने वाले तत्वों से निर्मित।
- स्थानीय क्षेत्र मे पाए जाने वाले पशुओं की दूध देने की क्षमता के अनुरूप।
- चीलेटेड मिनरल एवं अन्य आवश्यक मिनरल के साथ।
- विभिन्न प्रकार के विटामिन्स से युक्त।
- सुपाच्य प्रोटीन एवं बाईपास प्रोटीन से युक्त।
- "दुग्धामृत" पशु आहार विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों से परिपूर्ण है।

लाभ :

- दूध उत्पादन मे वृद्घि के साथ वसा व SNF बढाता है।
- जड़ी-बूटीयों के समावेश से दूध बढ़ाने व उतारने मे मदद करता है।
- यह सभी प्रकार के स्ट्रेस से बचाता है।
- दुग्धामृत प्रोबायोटिक्स युक्त पशु आहार है, जो पाचन शक्ति बढाता है।
- विभिन्न विटामिन A, D_3,E और B_{12} दूध बढाने मे एवं शरीर को स्वस्थ रखने मे मदद करते है।
- माइक्रो व मैक्रो मिनरल्स प्रजजन शक्ति मे बढ़ोतरी करते हैं तथा प्रति वर्ष एक बछिया के लक्ष्य को पाने मे मदद करते हैं।

उपयोग विधि :

	गाय	भैंस
स्वस्थ रखरखाव हेतु	1.5-2 किग्रा./दिन	2-2.5 किग्रा./दिन
दुग्ध उत्पादन हेतु	400 ग्राम/लि॰	500 ग्राम/लि॰
गाभिन अवस्था (अखिरी दो माह में)	1.5-2 किग्रा./दिन	2-2.5 किग्रा./दिन

पतंजलि दुग्धामृत गोल्ड :
(10-12 ली० से अधिक दूध देने वाले पशुओं के लिए)

विशेषताएं :

- "दुग्धामृत गोल्ड" यूरिया रहित पशु आहार है।
- पशुओ की आवश्यकतानुसार पाच्य प्रोटीन एवं एमिनो एसिड का सही संतुलन।
- बाय पास फैट व बाय पास प्रोटीन से युक्त।
- TDN: प्रोटीन का सही संतुलन।
- सुपाच्य प्रोटीन के साथ अन्य वसा एवं खनिज-लवण, विटामिन्स से भरपूर।
- प्रोबायोटिक एवं दूध बढ़ाने वाले आयुर्वैदिक पदार्थों का उचित मात्रा मे प्रयोग।

लाभ :

- पतंजलि दुग्धामृत सिल्वर में प्राप्त लाभ के अलावा,
- RUDP:RDP को सही अनुपात से दूध में उचित बढ़ोतरी।
- दुग्ध उत्पादन हेतु सम्पूर्ण आयुर्वैदिक ओषधियों का समावेश है।
- दुग्ध उत्पादन क्षमता को लम्बे समय तक बनाये रखने मे मदद करता है।
- प्रजनन क्रिया को व्यवस्थित करते हुए समय पर गरमी में आने में मददगार एवं अच्छा स्वास्थ्य बनाता है।

उपयोग विधि :

	गाय	भैंस
स्वस्थ रखरखाव हेतु	1.5-2 किग्रा./दिन	2-2.5 किग्रा./दिन
दुग्ध उत्पादन हेतु	400 ग्राम/लि०	500 ग्राम/लि०
गाभिन अवस्था (अखिरी दो माह में)	1.5-2 किग्रा./दिन	2-2.5 किग्रा./दिन

पतंजलि दुग्धामृत डायमंड :
(20 ली० से अधिक के पशुओं के लिए)

विशेषताएं :

- "दुग्धामृत" पशु आहार यूरिया रहित है।
- अधिक दूध देने वाले पशुओं के लिए आवश्यकतानुसार उर्जायुक्त।
- सुपाच्य प्रोटीन एवं अमीनो अम्ल का सही संतुलन।
- उचित मात्रा मे शाकाहारी खनिज-लवण व विटामिन्स का समावेश।
- उचित मात्रा मे बाय पास फैट व बायपास प्रोटीन का समावेश।
- दुग्ध उत्पादन हेतु विशेष आयुर्वेदिक पदार्थों का उपयोग।
- प्रजनन क्रियाओं पर उपरोक्त तत्वों का विशेष प्रभाव एवं समयानुसार गर्भधारण के लिए प्रेरित करना।

लाभ :

- पंतजलि दुग्धामृत गोल्ड से प्राप्त लाभ के अलावा,
- उचित मात्रा में खिलाने से अतिरिक्त कैल्शियम देने की आवश्यकता नहीं।
- सुपाच्य तत्वों विशेषकर प्रोटीन, वसा, खनिज-लवण (चिलेटेड लवण के साथ), विटामिन्स, प्रोबायोटिक एवं आयुर्वेदिक पदार्थों से भरपूर, एवं आवश्यक मात्रा में उपलब्ध कराना।

उपयोग विधि :

	गाय	भैंस
स्वस्थ रखरखाव हेतु	1.5-2 किग्रा./दिन	2-2.5 किग्रा./दिन
दुग्ध उत्पादन हेतु	400 ग्राम/लि०	500 ग्राम/लि०
गाभिन अवस्था (अखिरी दो माह में)	1.5-2 किग्रा./दिन	2-2.5 किग्रा./दिन

पतंजलि संवृद्धि :

- तरल कैल्शियम टॉनिक विटामिन A, D_3, B_{12} के साथ, संवृद्धि मे शुद्ध शाकाहारी कैल्शियम व फास्फोरस का प्रयोग किया गया है।
- संवृद्धि दुधारू, गाभिन व बढ़ते पशुओं में पोषक तत्वों की कमी को पूरा करता है।
- संवृद्धि में जीवन्ती व शतावरी दूध को बढ़ाने व उतारने मे मदद करता है।
- संवृद्धि में सम्मलित सिलिमयरिन लीवर का विशेष ध्यान रखता है।
- संवृद्धि में उपस्थित नीम रोग प्रतिरोधाक क्षमता को बढाता है।
- संवृद्धि में उपस्थित पाइपर लोंगम व विटामिन D_3 कैल्शियम को अवशोषित कर हड्डियों को मजबूत बनाते हैं।
- संवृद्धि आम के स्वाद मे है जो पशुओ को ज्यादा पसंद है।

खुराक :

- बड़े पशु : 100 मिली० प्रतिदिन
- छोटे पशु : 40 मिली० प्रतिदिन

पैकिंग :

- 1 लि०, 5 लि०

पतंजलि गर्भांजलि :

- पशु के ब्याहने के बाद की सम्पूर्ण देखभाल करता है।
- गर्भांजलि जेर निकलने मे मदद करता है।
- गर्भांजलि संक्रमण से बचाव व गर्भाशय की सफाई कर पयोमेटरा व मेट्राटिस (METRITIS) से बचाव करता है।
- गर्भाशय की मांसपेशियों का संकुचन कर शीघ्र पूर्ववत् स्थिति मे लाता है व प्रजनन क्षमता बढ़ाने में मदद करता है।
- गर्भांजलि एक मात्र ऐसा टॉनिक है जो जेर निकलने में मदद के साथ ब्याहने की नकारात्मक उर्जा को व्यवस्थित करता है।
- गर्भांजलि मे आयरन है जो खून की कमी की पूर्ति करता है।
- Ketosis जैसी बिमारी से भी बचाता है।

खुराक :

- बड़े पशु 100 मिली० प्रतिदिन
- छोटे पशु 40 मिली० प्रतिदिन

पैकिंग :

- 1 लि०

पतंजलि बतीसा प्रो :

- पशु जितना भी खाए वह ठीक से पाच्य हो व आहार का पूर्ण उपयोग हो सके यही पशुपालक चाहता है।
- पतंजलि बतीसा लार को उचित मात्रा मे बढाकर पशु को जुगाली मे मदद करता है।
- पतंजलि बतीसा रूमेन के pH को बैलेंस करता है।
- पतंजलि बतीसा भूख बढाता है व पाचन मे मदद करता है।
- पतंजलि बतीसा एक मात्र बतीसा है, जो प्रोबायोटिक व प्रिबायोटिक के साथ है।
- पतंजलि बतीसा रूमेन मायक्रोफ्लोरा की जनसँख्या बढाता है।

खुराक :

- 25 ग्राम दिन मे दो बार

पैकिंग :

- 100ग्राम
- 500ग्राम
- 1किग्रा.

दुग्धामृत सम्बन्धि पशुपालक की शंका एवं समाधान

प्रश्न : दुग्धामृत क्यों?

उत्तर : उचित मात्रा मे दुग्धामृत खिलाने से कुछ लाभ इस प्रकार हैं-

- पशुओ की उत्पादन क्षमता बढती है।
- पशु समय पर गाभिन होता है और हर साल एक बछिया का लक्ष्य प्राप्त करने मे मदद मिलती है।
- पशु बीमारी से दूर रहता है जिससे रोग पर होने वाले खर्च मे भारी कमी आती है।
- दूध का उत्पादन, फैट व SNF बढता है

प्रश्न : घर मे मिलाया हुआ दाना-खली देने से क्या नुकसान है?

उत्तर : घर मे मिलाया हुआ दाना-खली, मिलाने पर सही अनुपात मे मिश्रण नही हो पाता। दुग्धामृत वैज्ञानिको द्वारा वैज्ञानिक विधि से फार्मूला तैयार किया जाता है और चिलेटेड खनिज लवण व विटामिन्स मिलाने से प्रति वर्ष एक बच्चा पैदा होने की अधिक संभावना रहती है।

प्रश्नः- पशुओ मे पोषण तत्व की कमी के लक्षण क्या हैं?

उत्तरः-

- पशुओ मे कमजोरी आना
- भूख कम लगना
- दूध जल्दी कम हो जाना
- समय से गर्मी मे न आना
- मिल्क फीवर होना
- संक्रामक रोग का जल्दी असर करना
- तरह-तरह की बिमारियों से ग्रसित होने की सम्भावना

प्रश्न : यूरिया-मुक्त पशु आहार के क्या फायदे हैं?

उत्तर : पशुओं को, जिनका रूमेन पूरी तरह विकसित नही हुआ होता है, उसे यह नुकसान नहीं पहुंचता है।

- क्रूड प्रोटीन अधिक दिखाने के लिए कई कम्पनियां यूरिया की मात्रा मे अत्यधिक बढ़ोतरी कर देती हैं, जिससे पशु को काफी नुकसान होता है।
- अगर कार्बोहायड्रेट कम है तो यह अमोनिया मे बदल कर लीवर को नुकसान पहुंचा सकती है।

प्रश्न : दुग्धामृत किस प्रकार खिलाना चाहिये?

उत्तर : सन्तुलित पशु आहार सूखा व सानी बना कर दिया जा सकता है 1/2 घंटे से ज्यादा नही भिगोना चाहिये।

- टोटल मिक्स राशन (मिला हुआ) लाभकारी है (हरा, सुखा व पशु आहार)

  सन्तुलित पशु आहार को पकाकर नही खिलाना चाहिये।

प्रश्न : क्या दुग्धामृत खिलाने से दूध कम हो सकता है?

उत्तर : अचानक बदलाव से दूध मे असर पड़ता है, अतः बदलाव धीरे-धीरे करनी चाहिये 15 दिन पूर्ण खुराक देने पर दूध की मात्रा बढ़ेगी। दूध देने की मात्रा मौसम में बदलाव, सूखे, हरे चारे की क्वालिटी, दूध देते कितना समय हो गया, कौन सी ब्यात, गर्मी आने का समय, गाभिन की अवधि आदि पर भी निर्भर करती है।

प्रश्न : पशु आहार का कैसे रख-रखाव करना चाहिये?

उत्तर : पशु आहार को शुष्क व ठण्डे स्थान पर स्टोर करना चाहिये।

- पशु आहार को खाद व सीमेंट के साथ नही रखना चाहिये।
- पशु आहार को बरसात में 15 दिन से डेढ़ माह मे उपयोग कर लेना चाहिये।

दुग्धामृत हेतु पशुपालक को कुछ सुझाव

- पशुपालक को पशु को उचित मात्रा मे दुग्धामृत देना जरूरी है (न कम न ज्यादा)।
- नया आहार कम मात्रा मे मिलाकर प्रारम्भ करना चाहिये व धीरे-धीरे मात्रा बढानी चाहिये।
- दुग्धामृत को हरे व सूखे चारे के साथ मिलाकर देना चाहिये।
- आमतौर पर देखा गया है कि जब गाय-भैंस दूध नहीं देती हैं या सुखायी जाती हैं तब पशुपालक उसकी तरफ बहुत कम ध्यान देता है, खासकर उसकी खुराक पर। इसका परिणाम –
  - ब्याहने मे तकलीफ
  - जेर अटकना
  - मिल्क फीवर
  - कम वजन का बछड़ा
  - अपेक्षा से कम दूध
  - दूध मे उतार-चढ़ाव
  - ऋतु चक्र (हीट) मे गडबड़ी
- जागरूक पशुपालक को पशु का पूरा लेखा जोखा रखना चाहिये–
  - बच्चे जनने की तारीख, दुबारा गर्भ ठहरने की तिथि।
  - कृमि नाशक दवा एवं टीके का पूरा विवरण तिथि के साथ।
  - खुराक की मात्रा व उसके मूल्य का पूर्ण विवरण।
  - प्रतिदिन दुग्ध उत्पादन व मूल्य का लेखा जोखा (फैट/SNF)।

भविष्य मे हमारे उत्पादों में निम्न पशु ओषधियों का समायोग होगा

- लीवर के लिए
- थनैला रोग के लिए
- डायरिया (दस्त)
- ज्वर एवं पीडा के लिए
- घाव के उपचार हेतु
- भूख बढाने के लिए
- क्रिमीनाशक
- किल्ली एवं चिचडों के लिए
- मिनरल मिक्सचर
- पशु आहार पूरक